

SHRI SHABBIR AHMAD SALARIA (Jammu and Kashmir); I have an important point.

THE DEPUTY CHAIRMAN; No more important things. Now we shall discuss the communal situation. I think that is more important. Shri Mohammed Afzal.

CALLING ATTENTION TO A MATTER OF URGENT PUBLIC IMPORTANCE—COMMUNAL SITUATION IN THE COUNTRY—Contd.

श्री मोहम्मद अफजल उर्फ भीम अफजल (उत्तर प्रदेश) : मैडम, मैं आपकी त्वज्जह इस तरफ दिलाना चाहूंगा कि कल यहाँ इस बात की यकीनदहानी कराई गई थी कि इस अहम-इन्तहाई मसले पर जब बहस होगी तो वजीरेआजम साहब खुद यहाँ मौजूद रहेंगे। वजीरेआजम आए भी और आकर थोड़ी देर के बाद उठकर चले भी गये।

ऐसा लगता है कि जैसे उन्हें इस अहमतराइन मसले में कोई दिलचस्पी नहीं है और वह खास तौर से मोअज़िज़ मेम्बरान के ख्यालात सुनना नहीं चाहते।

कल सरोज खापर्डे जी ने एक मुबारकबाद उन्हें पेश की थी कि नया साल है, उसकी मुबारकबाद दी है। चूंकि वजीरेआजम साहब यहाँ मौजूद नहीं हैं और उनकी जो अदमे-दिलचस्पी है, उसको देख कर मैं यह कह सकता हूँ और अपने मोअज़िज़ लीडर आफ दी हाऊस के जरिए उनको एक शेर नजर करना चाहता हूँ।

“अभी जनवरी है, नया साल है, दिसम्बर में पूछेंगे, क्या हाल है।”

उपसभापति : दिसम्बर, 1991।

श्री मोहम्मद अफजल उर्फ भीम अफजल : जी।

एक माननीय सदस्य : तब तक वह रहेंगे भी ?

श्री मोहम्मद अफजल उर्फ भीम अफजल : जो भी होगा, पूछ लेंगे उनका हाल। कल जब हाऊस में इस मसले पर बहस हो रही थी और हमारे एक मोअज़िज़ मेम्बर बी० जे पी के, प्रमोद महाजन साहब बोल रहे थे तो उन्होंने एक बात कही थी कि इस हाऊस में खड़े होकर आप कुछ भी कह दीजिए लेकिन जब आप अवाम में जायेंगे तो वहाँ आपको कुछ और ही देखने को मिलेगा और वहाँ लोगों के जजबात की आपको कद्र करनी पड़ेगी। लेकिन इस हाऊस में उनकी तकरीर पर जो रिएक्शन था और मैं समझता हूँ कि यह हाऊस सिर्फ इस हाऊस को रिप्रेजेंट नहीं करता यह इस पूरे देश की जनता को रिप्रेजेंट करता है। उनकी तकरीर पर तमाम पार्टियों की तरफ से जो रिएक्शन आया उससे हमें यह अंदाजा हो गया है कि इस देश में भारतीय जनता पार्टी के मौकफ पर और कम्युनल सिचुएशन पर, उसकी सोच पर पूरे देश का क्या रिएक्शन हो सकता है, वह रिएक्शन देखकर मुझ जैसे आदमी को जो एक माइनारिटी कम्युनिटी से आया है एक यकीन सैकुलरिज्म के अन्दर और ज्यादा मजबूत हुआ है और ज्यादा बढ़ा है। मैं समझता हूँ कि जब तक यह सोच रहेगी कुछ ज्यादा मायूस होने की जरूरत नहीं है। मैडम, हमारे दोस्त जो इस हाऊस के मेंबर हैं और एक सियासी जमात से जिनका ताल्लुक है, एक बार मेरी उनसे गुफ्तगू हुई। उस गुफ्तगू में उन्होंने फर्माया कि मुझे यह बात कहने में कोई शर्म नहीं कि मैं आर० एस एस का बच्चा हूँ। उन्होंने फर्माया है कि आर एस एस का बच्चा हूँ। मैं इस हाऊस में उनके जजबे की कद्र तो कर सकता हूँ लेकिन आज मुझे ख्याल आया कि कल वह बहुत रिएक्ट कर रहे थे तो मैंने कहा कि मैं भी अपना कुछ हस्बोनसब उनको बता दूँ। मैं इस हाऊस में एलान करना चाहता हूँ कि मैं न मुस्लिम लीग का बच्चा हूँ, न मैं जमायत-ए-इस्लामी का बच्चा हूँ, न मैं जिन्हा का बच्चा हूँ, न मैं किसी

[श्री मोहम्मद अफजल उर्फ मीम अफजल]

और का बच्चा हूँ, मैं हिन्दुस्तान का बच्चा हूँ और हिन्दुस्तान के बच्चे की हैसियत से आपके सामने कुछ बातें रखना चाहता हूँ।

मैडम, जो कम्युनल सिचुएशन इस वक्त मुल्क में है उसकी सीरियसनेस का अंदाजा आप तीन-चार बातों से लगा सकते हैं। अलीगढ़ में एक ट्रेन से 4-5 लोगों को घसीट कर बाहर निकाला गया और कत्ल कर दिया गया। उनमें एक 12 साल का बच्चा भी था। जहांगीरपुरी में एक घर के 13 अफराद को जिसमें 4-5 साल के बच्चे भी शामिल थे जिंदा जला दिया गया। खुरजे के अन्दर हमारी हकूमत की कार-करदगी मलाहिजा फर्माइये। यह हाइट है। खुरजे के अन्दर बहुत सारी दुकानें जलीं और बहुत सारे लोग मरे। दुकानें जो जलीं उसके अन्दर यूनियन मिनिस्टर जो हमारे सरवर हुसैन साहब हैं उनकी 6 दुकानें भी फूंक दी गई। सारे अखबारों में छपा है। सरकार कहती है खुरजे में 5 लोग मरे। मैं आपको बताता हूँ कि सिर्फ एक घर के हाफिज मोहम्मद साविर साहब के खानदान के 10 अफराद को एक ही घर में कत्ल किया गया। उनकी 70 साल की बूढ़ी मां उम्मीदी बेगम, चचा मोहम्मद सुलेमान, चची मतीन बेगम, 16 साल की बच्ची कमर जहां, शाहिद 14 साल, मलका 10 साल, रानी 8 साल और शर्म की बात यह है कि डेढ़ साल का बच्चा साजिद उसको भी कत्ल कर दिया गया। मैडम, वाराणसी और जाफराबाद के बीच में एक ट्रेन से सिराज अहमद नामी शक्सी की फैमिली को मारा गया और उसके तीन बच्चों को जिनकी उम्र 10 साल, 8 साल और 5 साल थी उठाकर ट्रेन से बाहर फेंक दिया गया। फेंकने वाले कौन थे? मैंने कंफर्म नहीं किया है। मैंने अपनी आंखों से नहीं देखा है लेकिन सारे अखबारों ने लिखा है कि फेंकने वाले कार सेवक थे। यह कार सेवक वह हैं जो मर्यादा पुरुषोत्तम राम का मंदिर दोबारा बनाने का दावा करते हैं और बच्चों को ट्रेन से उठा कर फेंकते हैं। राम ने इन्हें कभी यह नहीं सिखाया। अलीगढ़ के मेडिकल कालेज के अन्दर एक लड़का है 27 साल का जो हास्पिटल में दाखिल होने के बावजूद दो

बार खुदकशी करने की कोशिश कर चुका है। क्यों, इसलिए कि सरिये डालकर उसकी आंखें फोड़ दी गयी और उसके टेस्टीकल को कुचल दिया गया। यह हाइट है। इसको देखकर मुझे फँस का वह घोर याद आता है—

“हरेक दार पर रखते चलो सिरों के चिराग,
जहां तलक भी ये जुलम की म्याह रान चले।”

1.00 P.M.

मैडम, यह फसादात की सिहत है। हमारे बुजुर्ग लोग जिन्होंने सन् 47 देखा है, मैं खुशनसीब हूँ, मैंने सन् 47 नहीं देखा और इस मुल्क के पार्टिसन का मैं जिम्मेदार नहीं हूँ, इसलिए इसकी कोई सजा भी भुगतने के लिए तैयार नहीं हूँ। लोग कहते हैं और हमारे बुजुर्ग कहते हैं कि इस वक्त मुल्क की जो हालत है, जिस तरह से लोग ट्रेन के अन्दर सफर करने से डरने लगे हैं, जिस तरह से लोग बसों के अन्दर सफर करने से डरने लगे हैं, उसको देखकर सन् 47 और 1857 याद आता है। मैडम, 1857 के खून से तो हमने अपनी जंगे आजादी की पूरी कहानी लिखी थी और 1947 में जो खून बहा उसमें हमने इस मुल्क का सेकुलर आइन लिखा था, मैं इन दंगे करनेवालों से पूछना चाहता हूँ, ये फसादात करनेवालों से पूछना चाहता हूँ कि 1990 में जो खून बहा रहा है इससे आप कौनसी तारीख लिखना चाहते हैं? क्या आप वही चाहते हैं जो 1947 में हुआ था? क्या आप इस मुल्क को एक बार फिर बांटने की साजिशें कर रहे हैं? क्या आप इस मुल्क की अकलियत को इस बात के लिए मजबूर नहीं कर रहे हैं कि वह पिटते-पिटते हाथ में हथियार लेकर खड़ी हो जाय और हर इलाके को पंजाब और कश्मीर बना दे? क्या चाहते हैं?

मैडम, ये फसादात की सिहत क्यों पैदा हुई, यह एक बड़ा अहम सवाल है। कल यहां आडियो कैसेट और वीडियो कैसेट की बात हो रही थी। मुझे लगता है कि पहले फिरकापरस्ती का सफर रथ पर शुरू हुआ था और अब नया सफर शुरू हुआ है। वह तो सोमनाथ से शुरू हुआ था। हैरत की बात यह है कि किसी मुअज्जिज मेबर ने इस पर

तबज्जह नहीं फरमायी। साबिक वजीरे आजम मोरारजी देसाई ने एक अखबार को इंटरव्यू देते हुए बंबई में कहा है कि "मैंने आडवाणी साहब को रथ यात्रा निकालने की सोमनाथ ट्रस्ट मंदिर के सदर की हैसियत से इजाजत नहीं दी थी। इसलिए यह रथ यात्रा मंदिर के बाहर से शुरू हुई थी। मैंने यह भी कह दिया था कि सोमनाथ मंदिर का कोई एम्पलायी आडवाणी साहब के गले में हार न डाले। इसलिए कि यदि ऐसा किया गया तो इस रथ यात्रा को रिलीजियस सेंक्रेटरी हासिल हो जाएगी।" यह बड़ी अहम बात है, नोट करने की। गोया, इस रथ यात्रा को सोमनाथ मंदिर का आशीर्वाद हासिल नहीं था। उन्होंने यह भी कहा कि, "मेरी समझ में नहीं आता कि ये मस्जिद तोड़ने जा रहे हैं। हमारे यहां तो सोमनाथ मंदिर के अहाते के अन्दर एक मस्जिद है और वहां वक्फ की कुछ जमीनें भी मौजूद हैं। वहां वक्फ पर मौलवी साहब अजान देते हैं। हम वक्फ पर अपना घंटा बजाते हैं। हमारा तो कभी झगड़ा नहीं हुआ।" शर्म आनी चाहिए उन लोगों को जो मंदिर मस्जिद के नाम पर इस मुल्क के एक अकलियत को आयसोलेट करना चाहते हैं .. (व्यवधान) .. नाम बताने की जरूरत नहीं है। सारा हाउस नहीं, पूरा मुल्क अच्छी तरह से जानता है।

मैंडम, मैं तबज्जह दिला रहा था कि फसाद त में इतनी सिद्ध क्यों पैदा हुई? मैंडम, फसादात पहले भी होते थे और फसादा त आज भी होते हैं। हम लोग इसके आदी हो गए हैं। लेकिन जो सिद्ध जो नफरत का जहर इस बार घुला है वह इसके पहले 40-45 साल में कभी नहीं घुला। पी० ए० सी० का सवाल आया था। कल महाजन साहब ने कहा कि हम पी० ए० सी० को डिफेंड नहीं कर रहे हैं। मैं भी पी० ए० सी० की हिमायत करने के लिए तैयार हूँ। लेकिन पी० ए० सी० जो कुछ कर रही है, पी० ए० सी० ने जो कुछ किया है क्या उसके बाद कोई भी इंसान कोई अकालाती कूबत पी० ए० सी० के उन कारनामों की खंडे होकर बकालत कर सकता है? लेकिन हमारे इस हाउस के एक मुअज्जिज मेंबर हैं, ये 9 दिसम्बर के पांचजन्य के अन्दर एक रिपोर्ट छपी है, आर० एस० एस० का तर्जुमा

है ये अखबार, उसने लिखा है कि राज्य सभा के मेंबर जनाब जे०के० जैन साहब ने पी० ए० सी० के 27 कमांडरों को रजिस्टर्ड कैसेट भेजे हैं और अपनी एक अपील भेजी है, जिसमें उन्होंने लिखा है कि गालिबन, जैन साहब रिप्लेट करने की जरूरत नहीं है, हो सकता है और अगर यह गलत हो तो आप जरूर डिनाई कीजिएगा, लेकिन यह आर० एस० एस० के अखबार में छपा है। मैं बताना चाहता हूँ। इस हाउस को कि ... (व्यवधान) ...

डा० जिनेंद्र कुमार जैन (मध्य प्रदेश) : मेरा नाम लेकर बात कही जा रही है ..

THE DEPUTY CHAIRMAN: He wants to deny. Mr. Mohammed Afzal, please wait a minute. Maybe, he wants to react. Do you want to react, Dr. J. K. Jain?

DR. JINENDRA KUMAR JAIN: Yes; the honourable Member was associating...

श्री मोहम्मद उर्फ मोम अक़ल: पूरी बात सुन लीजिए। उसमें यह कहा गया है कि अफगानिस्तान और श्रीलंका से कुछ टेरेरिस्ट आकर के हिन्दुस्तानी मुसलमानों के घर में छिप गए हैं और फसाद करना चाहते हैं। ... (व्यवधान) ...

THE DEPUTY CHAIRMAN: Please wait a minute. He wants to react.

SHRI SANGH PRIYA GAUTAM (Uttar Pradesh) : He must react how to prevent communal riots.

DR. JINENDRA KUMAR JAIN: The honourable Member is associating my name with some news item. I do not know what he is trying to say. I make a statement in this House. I have not sent a single cassette to any PAC person in any manner. 'That is one. There are many cassettes going around. But my organisation is associated with the production of only one video cassette. The title of the video cassette is

I make a solemn statement in this House. Not a word in the cassette is against anybody, neither against Muslims nor against

[Dr. Jinendra Kumar Jain]

any sector community. I make an offer to the honourable Members of this House that they must see that cassette and if they find anything objectionable in that (*Interruptions*)

THE DEPUTY CHAIRMAN: Please let him say what he wants.

डा० रत्नाकर पाण्डेय (उत्तर प्रदेश) : मैडम, यह सदन कैसेट के प्रचार करने का साधन मत बनने दीजिए। अहलुवालिया साहब इसको छेड़कर जिस तरह से प्रचार कर रहे हैं, लगता है कि वे इस कैसेट के एजेंट हैं। ये "प्राण जाए पर वचन न जाए" इसका विज्ञापन कर रहे हैं इस सदन के माध्यम से 85 करोड़ लोगों के बीच में।

श्री मोहम्मद उर्फ मीम अफजल: क्योंकि इन्होंने डिनाई कर दिया है तो मैं जैन साहब से दरखास्त करूंगा कि चूंकि यह आर. एस. एस. के तर्जुमान अखबार के अन्दर छपा है, इसलिए उनको अपना डिनाइल उस अखबार को भेजना चाहिए था।

उपसभापति : अखबार का नाम ?

डा० जिनेन्द्र कुमार जैन : मुझे अखबार का नाम बताया जाए।

श्री मोहम्मद उर्फ मीम अफजल : "पंचजन्य"।

डा० जिनेन्द्र कुमार जैन : मैं "पंचजन्य" नहीं पढ़ता हूँ।

श्री सुरेन्द्र जीत सिंह अहलुवालिया (बिहार) : यह "पंचजन्य" नहीं पढ़ते। आर० एस एस के सदस्य हैं, "पंचजन्य" नहीं पढ़ते। ... (व्यवधान) ...

उपसभापति : अहलुवालिया साहब, बैठ जाइए। इन्होंने डिनाई कर दिया, बात खत्म हो गई।

श्री मोहम्मद उर्फ मीम अफजल : मैडम, उद्दयन शर्मा साहब की "संडे ग्रांजर्वर" में एक रिपोर्ट छपी है। वैसे तो इस वक्त हिन्दुस्तान में हर अखबार बहुत सारी खबरें छापता है, अगर पढ़े तो दिल डरता है कि आज पता नहीं कौन सी खबर छपी होगी। उसमें उन्होंने आगरा के एक एम एल० ए को वोट किया है जिसमें उन्होंने कहा है कि "हमें गांव-गांव में मुसलमानों को देखना है"।

जो नारे लगते रहे हैं, वह बताने की जरूरत नहीं। एक बड़ा दिलचस्प नारा है कि "मुसलमानों के लिए पाकिस्तान या कश्मिर"। पाकिस्तान तो हम जाने वाले हैं नहीं और खास तौर से जो नई जनरेशन है, उसके बारे में आपको बता दूं कि हम पाकिस्तान बनाने के न जिम्मेदार हैं और न उसकी सजा भुगतने के लिए तैयार हैं। न बाबर ने जो कुछ किया था उसके जिम्मेदार हैं, न उसकी सजा भुगतने के लिए तैयार हैं। हम आजाद हिन्दुस्तान में पैदा हुए हैं और बाबर के कानून से या किसी और राजा के कानून से गवर्न नहीं होते हैं बल्कि इस मुल्क के आजाद सैक्यूलर डेमोक्रेटिक आइड्स से गवर्न होते हैं। वह कानून जो कहेंगा, हम करने के लिए तैयार हैं। मैं अपना प्वाइंट आफ व्यू रखना चाहता हूँ कि इस देश के सामने जो लोग हिन्दू फिरकापरस्ती को गाली देते हैं, उसके साथ फैशन के तौर पर मुस्लिम फिरकापरस्ती का भी नाम लेते हैं। जब वह मस्जिद की बात करते हैं और मंदिर की बात करते हैं तो वह मुसलमानों को भी एक तरह से गाली देते हैं कि यह मस्जिद की जो पालिटिक्स कर रहे हैं, यह सब गलत कर रहे हैं।

मैं आपको कहता हूँ कि मैं बाबरी मस्जिद एक्शन कमेटी का सदस्य नहीं हूँ और न उसका बनना चाहता हूँ। एक आजाद हिन्दुस्तान की हैसियत से, एक जर्नलिस्ट की हैसियत से, एक मैम्बर आफ पार्लियामेंट की हैसियत से अगर सच्चाई उसमें है तो उसके साथ हूँ, मुझे एक्शन कमेटी में जाने की जरूरत नहीं है। मैं यह कहता हूँ कि इस मुल्क में हिन्दु

और मुसलमान बड़े और छोटे भाई की तरह से हैं। झगड़ा दो भाइयों में भी होता है घर में, दीवार भी खींच जाती है। एक दीवार आप खींच चुके हैं। लेकिन इस झगड़े को बढ़ाकर एक नयी दीवार खड़ी करने की कोशिश मत कीजिए। मैं कहता हूँ हिन्दुस्तान का कोई मुसलमान राम के खिलाफ नहीं है, राम मंदिर के खिलाफ नहीं है क्यों नहीं है यह भी सुन लीजिए मजहब हमारा क्या कहता है इस सिलसिले में। किसी भी मजहब के प्यारों को किसी भी मजहब की बाइज्जत शख्सियत को बुरा कहना इस्लाम में बुरा नहीं गुनाह है और यह गुनाह हम कभी नहीं करेंगे। हम राम की उतनी ही इज्जत करते हैं जितनी रहीम की करते हैं। लेकिन माफ कीजिये और मैं यह भी कहता हूँ कि हमें यह पूछने का कोई हक नहीं है कि राम पैदा हुये थे या रामायण ठीक थी या नहीं थी? यह आपका बिलीफ है हमारी आंखों पर सर आंखों पर। हम आपके बिलीफ की कद्र करते हैं, हम आपके बिलीफ की इज्जत करते हैं, हम आपकी आस्था को सलाम करते हैं, नमस्कार करते हैं। लेकिन जब आपकी आस्था किसी दूसरी आस्था से टकरायेगी तो इस मुल्क में कोई तो फैसला करेगा। कौन है वह फैसला कराने वाला? मेज पर आप बैठते हैं, बातचीत करते हैं 6 तारीख को कार सेवक ऐलान करते, और जब बातचीत का एक माहील बनने लगता है तो 7 तारीख को अलीगढ़ में दंगे करा देते हैं और उसके बाद बने बनाये माहील को तबाह और बरबाद कर देते हैं। यह वह मिलिटेंट सैक्शन है विश्व हिन्दु परिषद का जिसने इस मुल्क में फसादात शुरू कराये 7 तारीख से ताकि विश्व हिन्दु परिषद और बाबरी मस्जिद एक्शन कमिटी के दरम्यान जो गुफ्तगू हो रही वह नाकाम हो जाये। उसके बाद कागजातों का आदान-प्रदान हुआ। मैं और कुछ नहीं कहना चाहता मोआज्जिज होम मिनिस्टर साहब यहां बैठे हुये हैं। यह इस बात के गवाह हैं, इनकी फाईलें इस बात की गवाह हैं और इनकी फाईलें गवाह हों या न हों इनका दिल इस बात की गवाही देगा और बतायेगा कि कौन जायज है और कौन नाजायज है? हमने पूरा कोआप्रेशन

दिया आज तक। जब हम से अखबार वालों ने पूछा कि बाबरी मस्जिद एक्शन कमिटी के आपने कागजात दे दिये हैं और अपना सबूत पेश कर दिया है और विश्व हिन्दु परिषद वालों ने अपने कागजात में आपकी क्या दिया है? तो हमने यही जवाब दिया कि इसका फैसला दस तारीख को करेंगे जब बातचीत की मेज पर बैठेंगे लेकिन यह विश्व हिन्दु परिषद वह है जिसने तीन चीफ मिनिस्टर्स भीरो सिंह शेखावत साहब, शरद पवार साहब और मुलायम सिंह यादव साहब और यहां सुबोध का त सहाय, होम मिनिस्टर बैठे हुये हैं जो चारों हजरात आर्बिट्रेटर हैं, इन लोगों से बगैर पूछे इन लोगों को बगैर कांफिडेंस में लिये हुये यह ऐलान कर दिया कि हमने बाबरी मस्जिद के कागजात को रिजेक्ट कर दिया है। वजह? वजह यह है कि वह तो सब लीगल कागजात हैं, हिस्टोरिकल कोई प्रूफ नहीं है। मैं आपके पूछना चाहता हूँ कि 1885 के अंदर अगर किसी कोर्ट ने कोई फैसला कर दिया है और उस फैसले पर अमल भी हुआ है तो क्या उसकी सिर्फ लीगल हैसियत है, क्या उसकी कोई हिस्टोरिकल इपोटेन्ट नहीं है? आप फरमाते हैं कि उसकी कोई हिस्टोरिकल इम्पोटेन्ट नहीं है। जो किताबें होंगी शायद वही हिस्टोरिकल इपोटेन्ट होगी। यह खबरा है दो फरीके का। मैं इस सदन के जमीर से सवाल करना चाहता हूँ कि आस्था की हम इज्जत कर सकते हैं लेकिन हम विद्वा की कैसे इज्जत कर सकते हैं? विद्वा का जो माहील बना हुआ है क्या उससे लड़ा जा सकता है? एक कहावत है उर्दू के अंदर दिल्ली में बहुत लोग सहते हैं - "हमारा टेम्प वहीं अड़ा, खाने को मांगे दही बड़ा" यह वही खबरा है कि नहीं साहब आप कुछ भी कहते रहिये, बातचीत का नतीजा कुछ भी निकले हम वही बात कहेंगे जो पहले कहते थे और उससे एक इंच पीछे नहीं हटेंगे। आप एक इंच पीछे नहीं हटेंगे। मैं इस सदन के सामने एक हिन्दुस्तानी की हैसियत से, एक हिन्दुस्तानी मुसलमान की हैसियत से बाबरी मस्जिद का केस रखना चाहता हूँ मैं सच कहता हूँ मैं मजहबी आदमी नहीं हूँ मैं पांचों वक्त की नमाज नहीं पढ़ता, मैं बहुत गुनहगार हूँ। लेकिन मैं इज्जत पसंद की हैसियत से आपसे पूछना

[श्री मोहम्मद अफजल उर्फ मीम अफजल]
चाहता हूँ कि इस्लाम में इस बात की इजाजत नहीं है कि मस्जिद को हटाया जा सके या मस्जिद को तोड़ा जा सके यह हमारी आस्था है। आपकी आस्था यह है कि राम का मंदिर वहीं बनेगा जहाँ गर्भ गृह है और गर्भ गृह कहाँ है उस मंम्बर के ऊपर जहाँ मोअज्जिन खड़े हो करके जुम्मे का खुतबा देता है और नमाज पढ़ता है। कितना जबरदस्त टकराव है? मैं आपकी आस्था की कद्र करता हूँ लेकिन मैं आपसे पूछना चाहता हूँ कि आपकी आस्था अचानक चार साल में कैसे जाग गई? 1949 में जब मंदिर मस्जिद के अन्दर मूर्तियाँ रखी गयी उसकी एफ०आई०आर दर्ज है उसकी तरफ से यू०पी० गवर्नमेंट ने पूरा केस लड़ा है।

उस वक्त आपकी आस्था कहाँ थी? 1977 में जब आप जनता पार्टी के अंदर शामिल हुए, यह मैं बी०जे०पी० से बड़े अदब से कहूँगा उस समय आपने इस राम जन्मभूमि के मसले को क्यों नहीं रखा? यह चुनाव चिह्न लगाकर, रथ यात्रा करके अपनी आस्था की साबित करना चाहते हैं, क्या इस मुल्क में रहने वाले हिंदु इस बात से कन्विस होंगे कि आपकी आस्था सिर्फ 4 साल में जगी है? इससे पहले आपकी आस्था कहाँ थी मैं पूछना चाहता हूँ बड़े अदब से सवाल करना चाहता हूँ बड़ा भाई समझकर आपसे बात करना चाहते हैं देखिए आप जिस किस्म का माहौल पैदा कर रहे हैं, आप कहते हैं कि अखिलधर्मों के साथ अपीजमेंट हो रहा है। मुझे शर्म आती है यह बात कहते हुए कि हम 40 सालों से रो रहे कि फसादात में हमारा खून, हमारी जायदादें, हमारी इमलात लुट जाती है। हम चिल्ला रहे हैं, हिन्दुस्तान की प्रैस इस बात की गवाह है। मैं मुबारकबाद देता हूँ नेशनल प्रैस को, जिसने बड़ी ईमानदारी के साथ इन 40 सालों में इस मुल्क की हकीकतों को खुलकर अवाम के समाने रखा और आज भी रख रही है।

हमारा परसेंटेज नौकरियों में 15 और 20 फीसदी से डेढ़ फीसदी रह

गया, कहीं एक फीसदी है, कहीं जीरो है। आप कहते हैं कि धर्म की बात न करिए, मैं आप से पूछना हूँ कि पी.ए.सी. के अंदर आपने कितने मुसलमानों को रखा? कितने मुसमानों को आपने पुलिस के अंदर रखा? कितने मुसलमानों को आपने फौज में रखा, जरा बताइए। सेटल सेक्रेटेरिएट का रिकार्ड उठाकर देख लीजिए और सब बातों को छोड़ दीजिए, इस मुअज्जित पालियामेंट का स्टाफ देख लीजिए और बताए कि कितने मुसलमानों को आपने रखा है।

हमको माशी तौर पर फसादात करके तबाह किया जा रहा है। सरकारी तौर पर इंटरव्यू में बैठे हुए लोग हमसे आगे रहते हैं। हमारा सविसेज में रिकार्ड कम है और इनका खयाल है कि मुसलमानों के साथ अपीजमेंट किया जा रहा है। भाई किस अपीजमेंट की बात कर रहे हैं आप? क्या आप उस अपीजमेंट की बात कर रहे हैं कि हर इलेक्शन से पहले उर्दू का नारा लगा दिया कांग्रेस ने, हर इलेक्शन से पहले यह कह दिया कि सब मुसलमानों को हम बराबरी से रिप्रेजेंटेशन देंगे। मुझे शिकायत सारी पार्टियों से है। माफ कीजिएगा, अपनी पार्टी से भी है और इसी हाऊस के अंदर खड़े होकर मैंने यह कहा है और जब तक जुवान है, कहता रहूँगा।

मैं आपसे एक बात कहना चाहता हूँ कि अपीजमेंट का होवा खड़ा करने से आम आदमी, इस देश के 70 फीसदी हिंदु और मुसलमान पढ़े लिखे नहीं हैं, ब्रह्म जाते हैं। उनके दिल में नफरत पैदा की जा रही है लेकिन इस नफरत का नतीजा क्या निकलेगा, मैं सिर्फ आपसे यह पूछना चाहता हूँ। मेरा खयाल यह है कि इसका नतीजा आहिस्ता-आहिस्ता जाहिर होने लगा है। मुझे इत्तिला मिली है कि कहीं किसी एक फसाद में कुछ मुसलमान लड़कों ने पुलिस के लोगों पर हमला कर दिया। मुझे नहीं मालूम कि यह ठीक है या गलत है। गृह मंत्री जी यहां बैठे हैं, उनको पता होगा। मैं आपसे यह कहना चाहता हूँ कि ऐसा क्यों हुआ

मैं उस हमले की किसी हालत में भी, मर भी जाऊंगा तब भी, हिमायत नहीं करूंगा लेकिन यह जरूर पूछना चाहूंगा कि आप किसी को मारते रहेंगे तो कब तक वह बरदाश्त करेगा, कब तक वह सुनता रहेगा।

महाजन साहब पैसे का हिसाब रखते हैं, वह बता रहे थे कि हम तो सूद का हिसाब रखते हैं। महाजन साहब अभी यहां तशरीफ नहीं रखते हैं। मैं उनसे पूछना चाहता हूँ कि लाशों का हिसाब क्यों नहीं रखते? हमारे जे.के. जैन साहब इस हाउस के म्यूजिजिंग मेंबर हैं। मैं शुरू में इनकी बातों से बड़ा मुतासिर हुआ और मुझे लगा कि इनके अंदर जज्बा है हिन्दू-मुसलमान एकता को बढ़ाने का लेकिन ये गलती से आर.एस.एस. के आदमी हैं... (व्यवधान)

DR. JINENDRA KUMAR JAIN: The hon. Member is referring to my name. If there is any problem, I will be able to help him.

SHRI MOHAMMAD AFZAL alias MEEM AFZAL: Mr. Jain, I want your help. I really want your help.

मैं आपसे कहूंगा कि आपने एक कैसेट बनाया है, वह कैसेट मैंने भी देखा है। आप यकीन जानिए जब मैंने उसमें दो भाइयों की लाशें देखीं तो मेरा खून खौल गया और मेरे सामने इस मुल्क में 1947 के बाद की सैकड़ों, हजारों लाशें घूम गईं जिनका पी.ए.सी. ने यह हशर किया है। लेकिन मैं पूछना चाहता हूँ कि आपने अयोध्या की लाशों के कैसेट बना लिए और उनको करंसी में कनवर्ट कर लिया। अगर आप इस मुल्क के लिए बाकई बफा-दार हैं तो आप अलीगढ़ की लाशों के कैसेट बनाइए, आप खुरजा की लाशों के कैसेट बनाइए, आप मलियाना की कैसेट बनाइए... (व्यवधान)

DR. JINENDRA KUMAR JAIN; Madam, may I react to this?

THE DEPUTY CHAIRMAN: Okay. j React.

DR. JINENDRA KUMAR JAIN; Madam, he has said certain things. I am sure... (Interruptions) Madam, the hon. Member has Said that I have made a cassette on Ayodhya. He is right. But he should also know that I had also made a cassette on Maliana, he should also know that I had also made a cassette on Hashim-pura, he should also know that I have the recordings of the killings in Bhagalpur, and he should also know that my team is working to make cassettes on Aligarh and Khurja. But... (Interruptions)

उपसभापति : अब आपकी बात पूरी हो गई, अब यह मामला खत्म हुआ... (व्यवधान)

डा० रत्नाकर पाण्डेय : जो कैसेट बने उनके विक्रे से कितने पैसे मिले ? जो अयोध्या के कैसेट बने उनसे कितने पैसे मिले ? ... (व्यवधान)

THE DEPUTY CHAIRMAN: Now we are not keeping a record of the account of this.. That is the job for the Income-tax, not for us.

DR. JINENDRA KUMAR JAIN: Madam, let me answer.

THE DEPUTY CHAIRMAN: Don't answer. You answer it to the Income-tax. not to this House. Please sit down. (Interruptions)

DR. JINENDRA KUMAR JAIN; Madam, the hon. Member has made a very important remark. He is a very responsible, experienced Member. If it was a matter concerning with income-tax, this great man would not have raised the issue here. He thinks that somebody is trying to make money at the cost of the national interest. Therefore, he has expressed this. Do I not have the responsibility, Madam, to tell my senior colleague that he is not fully acquainted with the facts? He should know that maybe 10 or 15 days back, the studio of mine where an investment of crores of rupees has been put in out of the borrowed money from the commercial banks has...

THE DEPUTY CHAIRMAN: Mr. Jain, may I remind you that your name is before me and you are going to make a speech? I will give you two more minutes to add to whatever you speak. I will give you two more minutes to speak about it and you can satisfy him.

श्री मोहम्मद अफजल उर्फ मीम अफजल : महोदया, मैं इनका शुक्रगुजार हूँ। मलियाना का कैसेट इन्होंने इसलिए बनाया था कि उस वक्त कांग्रेस की सरकार थी और अयोध्या का कैसेट इन्होंने इसलिए बनाया कि इनकी बी०पी० सिंह के साथ ठन गई ... (व्यवधान)

THE DEPUTY CHAIRMAN: Mr. Afzal, will you please conclude your speech?

श्री मोहम्मद अफजल उर्फ मीम अफजल : मैं कनक्लूड कर रहा हूँ। महोदया, जहाँ मैं एक तरफ इन फसादात के लिए विश्व हिन्दू परिषद् की और इशारा कर रहा हूँ, वहीं मैं इसके लिए इस हुकूमत को भी बराबर का जिम्मेदार मानता हूँ। मैं आपसे एक बात अर्ज करना चाहता हूँ कि हुकूमत का काम लोगों को सैस्यूरिटी देना है। किसी ने कल मजाक में कहा कि सुबोध कांत जी पहले भी थे और आज भी हैं। मैं यह बात समझ सकता हूँ और मुझे पूरा यकीन है कि अगर सुबोध कांत जी जैसे मिनिस्टर जिम्मेदारी से अपना काम करें तो शायद कुछ मसाल हल हो सकते हैं। मैंने इनको इस बात के लिए कोशिश करते हुए देखा है हालांकि यह अलग बात है कि ये इन कोशिशों में नाकाम हुए हैं। जब अलीगढ़ में दंगा हुआ तो मैं इनके घर गया और मैंने इनके घर पर ही धरना दिया। ये मुझे मोहब्बत से उठाकर ले गए। मेरे सामने इन्होंने जो कुछ भी यू पी सरकार को कह सकते थे कहा और जो कुछ इंतजाम फोर्स भेजने के लिए कर सकते थे इन्होंने किया। मैं उनका शुक्रगुजार हूँ लेकिन मैं इस बात का गवाह हूँ, मैंने इनकी बेबसी अपनी आँखों से देखी है। जब इस मुल्क में वजीरे आजम और वजीरे खारजा भी फिरकावाराना वारदातें

फैलाने वालों के आगे बेबसी महसूस करने लगे तो जरा मुझे बताइए कि वे लोग जिनके साथ जुल्म हो रहे हैं वह क्या करेंगे? वे लोग पहले मायूस हुए थे फिर उनके अंदर बेजारी बढ़ी। मैं आपसे निवेदन यह करना चाहता हूँ, इस बात को वजीरे दाखिला खासतौर से नोट कर लें कि अब उनके अंदर बगावत का जज्बा पैदा हो रहा है। वजीरे आजम साहब जो यहाँ मौजूद नहीं हैं, जिन्हें दिलचस्पी नहीं है शायद इस मसले पर उनके तीन दिन से बयानात की झड़ी लगी हुई है। ऐसा लग रहा है जैसे पंजाब का मसला हल कर लिया गया है। चिराम तले अंधेरा वाली बात है। पंजाब का मसला हल करने के लिए बयानात दे रहे हैं। चिराम के तले न जाने कितने कश्मीर, न जाने कितने पंजाब बुलबुल रहे हैं। उन्हें इस बात का पता नहीं है कि जब यह फन फैला कर खड़े हो जायेंगे तब वह शायद इस तरफ भागेंगे। वजीरे दाखिला साहब यहाँ मौजूद हैं। मैं समझता हूँ इस मौजिज हाऊस के अंदर वह बयान दें क्योंकि मसला बहुत बड़ा है बावरी मस्जिद और राम जन्म भूमि के मसले से। मैं किसी की आस्था के खिलाफ नहीं हूँ। लेकिन वजीरे दाखिला को यह बात बतानी होगी कि इस मुल्क में जिद चलेगी या आस्था चलेगी, जिद चलेगी या कानून चलेगा, जिद चलेगी या इन्साफ चलेगा। वह मुझे बतायें कि बावरी मस्जिद को तोड़कर मन्दिर बनाने की इजाजत दी जायेगी या नहीं? वह इस हाऊस में बयान दें इसलिए कि जब इस मुल्क का वजीरे आजम शपथ लेने के दूसरे दिन एक फिरकापरस्त पार्टी के सदर के घर मिलने के लिए, सलाम करने के लिए जाता है और मुब्तलिफ फिरकापरस्त लीडर के घर पर विश्व हिन्दू परिषद् के लोगों से मिलता है तो मुझे उस वजीरे आजम की सोशलिस्ट छवि, समाजवादी छवि खत्म होती नजर आ रही है। लोगों का कांफिडेंस उसमें खत्म हो जाता है। मैं आपसे कहना चाहता हूँ अगर वोट की सिसायत में 88 सीटों के दम पर यहाँ हर कोई शख्स अपने आगे किसी को झुका सकता है तो आप समझ लीजिए इस मुल्क में चाहें

लोगों की पार्लियामेंट के अंदर कमी हो लेकिन बाहर कोई कमी नहीं है अगर मुकाने का रवेया शुरू हो गया तो इस मुल्क के लिए एक नुकसानदेह होगा।

मैं आखिर में कहना चाहता हूँ खास-तौर से उन हजरात से जो हिन्दुस्तान के मुसलमानों को बहरे-बंगाल, पाकिस्तान और कश्मिर दिखाना चाहते हैं। मैं उनको कहना चाहता हूँ कि हम न पाकिस्तान जायेंगे न कश्मिर जायेंगे। अगर आपने बीस करोड़ मुसलमानों को कश्मिर भेजने की कोशिश की तो दो-दो गज जमीन चाहिए और इसके लिए एक नया पाकिस्तान देना पड़ेगा उनके कश्मिर के लिए। इस बात को आप समझ लीजिए। इसलिए बेहतर यह है कि भाई-चारे का माहौल पैदा करने के लिए मैं आप से दवास्त करता हूँ। हाथ जोड़कर निवेदन करता हूँ कि इसको डर मत समझिये। मैं इस मुल्क की भलाई के लिए कह रहा हूँ। नफरत का माहौल खत्म कर दीजिए। दोस्ती में जो फायदा है वह दुश्मनी में नहीं है। उससे इस मुल्क का नुकसान होगा। इस मुल्क के हिन्दुओं का या मुसलमानों का नुकसान नहीं होगा अगर इस मुल्क में हिन्दू मरेगा या इस इस मुल्क में मुसलमान मरेगा तो इस मुल्क का नुकसान होगा और इतना भयानक नुकसान होगा कि जो न आपसे उठाया जायेगा और न किसी और से। (व्यवधान)

श्री कैलाश नारायण सारंग (मध्य प्रदेश) : आप धमकी मत दीजिए। (व्यवधान)

श्री मोहम्मद अफजल उर्फ मौम अफजल : मैं धमकी नहीं दे रहा हूँ। मैं खासतौर से नई जनरेशन की तरफ ध्यान दिया रहा हूँ। (व्यवधान) मेरा धमकी देने का स्टैंडल कभी नहीं रहा है। आज उठाकर देख लीजिए चार साल की तारीख का रिकार्ड। हमारी कम्युनिटी में से किसी ने भी धमकी दी उसका क्या हुआ आप देख लीजिए। आज उसको अबाम नहीं पूछता।

629 RS-10

PROF. SOURENDRA BHATTACHARJEE (West Bengal): What is he saying? You see the records.

THE DEPUTY CHAIRMAN: I will go through the record.

श्री मोहम्मद अफजल उर्फ मौम अफजल : जिस शख्स ने धमकी दी उसका हथ आपने सामने है। हम धमकी देने वाले लोग नहीं हैं। लेकिन आप यह न समझिये कि हम बेहद कमजोर हैं। (व्यवधान)

श्री जगदीश प्रसाद माथुर (उत्तर प्रदेश) : अफजल भाई जोश में आकर गलत बात कह गये। मैं यह मानता हूँ कि उनकी यह मंशा नहीं थी। उनको बाजे कर देना चाहिए।

उपसभापति : उन्होंने क्या कहा ?

श्री जगदीश प्रसाद माथुर : वही बता रहा हूँ। उन्होंने कहा कि उनको दो गज जमीन चाहिए और इसके लिए आपको दूसरा पाकिस्तान देना पड़ेगा। मैं जानता हूँ वह दूसरा पाकिस्तान नहीं चाहते लेकिन जो गलतफहमी पैदा हो गई उसको उनको दूर कर देना चाहिए।

श्री मोहम्मद अफजल उर्फ मौम अफजल : मैं कश्मिर के लिए कह रहा हूँ ... (व्यवधान)।

श्री जगदीश प्रसाद माथुर : पाकिस्तान क्यों कहते हो ?

श्री मोहम्मद अफजल उर्फ मौम अफजल : आप इतने खोफजदा क्यों हो ? मेरी समझ में नहीं आता कि इस मुल्क के अन्दर लाशों के ढेर लगते हुए आप खोफजदा नहीं होते, यहां मेरे बोलने से आप खोफजदा हो गये ... (व्यवधान)।

श्री जगदीश प्रसाद माथुर : खोफजदा इसलिए हूँ कि मेरा एतराज पाकिस्तान पर है। मेरे दोस्त ने जब यह बात कही तो ऐसा लगता है कि उनके अन्दर कहीं पाकिस्तान छिपा हुआ है ... (व्यवधान)

श्री मोहम्मद अफजल उर्फ मीम अफजल : मैं उस पाकिस्तान को भी गलत समझता हूँ और इस पाकिस्तान को भी गलत समझ रहा हूँ। यह बात मैं आपसे कह रहा हूँ। लेकिन आप लोगों को मजबूर मत करिये।

श्री जगदीश प्रसाद माथुर : लेकिन खुदा के लिए पाकिस्तान मत कहिये।

डा० जिनेश कुमार जैन : आप ऐसा क्यों बोलते रहते हैं, आपकी क्या मजबूरी है?

श्री मोहम्मद अफजल उर्फ मीम अफजल : हमारी कोई मजबूरी नहीं है, मजबूरी आपकी है, सियासी मजबूरी है, वोट की मजबूरी है ... (व्यवधान)

THE DEPUTY CHAIRMAN: The House is going to be adjourned now.

श्री जगदीश प्रसाद माथुर : मेडम, ऐ स लगता है कि उनके जजवात में कहीं न क पाकिस्तान छिपा हुआ है।

श्री मोहम्मद अफजल उर्फ मीम अफजल : नहीं छिपा हुआ है।

श्री जगदीश प्रसाद माथुर : तो मना कर बीजिये।

श्री मोहम्मद अफजल उर्फ मीम अफजल : मैंने कह दिया है।

श्री उपसभापति : उन्होंने कह दिया है, अब आप बंद कीजिये।

श्री मोहम्मद अफजल उर्फ मीम अफजल : अगर इस मुल्क के मुसलमानों को कोई शक्स कश्मिरान भेजना चाहता है तो हमारा रिपे-वशन क्या होगा, इसको समझ लीजिये। आप लोग सदन के अन्दर बहुत अच्छी तकरीरें करते हैं। अबरार साहब ने बिल्कुल सही कहा कि आप लोग सदन में बहुत अच्छी तकरीरें करते हैं, लेकिन क्या

सदन में आप वही तकरीरें करते हैं जो रथ के सफर में कर रहे थे।

डा० जिनेश कुमार जैन : बिल्कुल वही (व्यवधान)।

It is all a documented fact.

श्री मोहम्मद अफजल उर्फ मीम अफजल : बिल्कुल नहीं कर रहे थे। जब आप तकरीर करेंगे तो मैं उसको सुनूंगा और नोट करूंगा ... (व्यवधान)

THE DEPUTY CHAIRMAN: Now, it is over. The House is going to be adjourned.

श्री मोहम्मद अफजल उर्फ मीम अफजल : मैं हुकूमत से इस बात का मतलब करना चाहता हूँ कि इस मुल्क के अक्वाम को, हिन्दुओं को, मुसलमानों को, वह पूरा प्रोटेक्शन दे और बातचीत को आगे बढ़ाने की कोशिश करे और अगर बातचीत आगे नहीं बढ़ती है तो हुकूमत को समझ लेना चाहिए कि कौन लोग जिद पर हैं और कौन वाकई तसमाना चाहते हैं। आप उसके मुताबिक कानून को देखिये। मैं मुसल-सल सुनता रहा हूँ। आडवाणी साहब ने एक बयान दिया और वह अखबारों में भी छपा कि इस मुल्क के मुसलमानों को पुलिस नहीं बचा सकती है, स्टेट नहीं बचा सकती है और अगर बचा सकते हैं तो हिन्दू बचा सकते हैं। क्या मतलब है इस बात का? क्या आप कांस्टिट्यूशन के खिलाफ बात नहीं कर रहे हैं ... (व्यवधान)

THE DEPUTY CHAIRMAN: Please conclude now.

श्री मोहम्मद अफजल उर्फ मीम अफजल : क्या कोई इस मुल्क में इस बात का नोटिस लेने वाला है? किसी ने क्या उनके ऊपर बगावत का मुकदमा दायर किया? क्या होम मिनिसट्री ने कोई एक्शन लिया? मैं अगर यह कहूँ कि जे० के० जैन साहब आपके साथ जो शोडो घूम रहा है वह आपको नहीं बचा सकता, उसमें इतनी ताकत नहीं है। इस मुल्क की हुकूमत आपको नहीं बचा सकती, बचा सकते हैं तो हम बचा सकते हैं तो क्या जुर्म नहीं कर रहा हूँ? लेकिन अगर किसी पार्टी का लीडर कोई जुर्म करता है तो न तो होम मिनिसट्री सुनते और न ही बीजेरे आजम सुनते हैं।

+ [شری محمد عرف م - افضل (اتر پردیش) ، میڈم میں آئی تو جبراً اس طرف دلا دیا جاتا ہوں کہ کل بیان اس بات کی یقین دہانی کرائی گئی تھی کہ اس اہم انتہائی مسئلے پر جب بحث ہوگی تو وزیر اعظم صاحب خود بیان موجود رہیں گے ۔ وزیر اعظم آئے بھی اور آکر مفوضی دیر کے بعد اٹھ کر چلے بھی گئے ۔ ایسا لگتا ہے کہ جیسے انہی اس اہم ترین مسئلے میں کوئی دلچسپی ہی ہے اور وہ خاص طور سے مندرجہ بالا کے خیالات سننا نہیں چاہتے ۔ کل صبح کھانسی سے جیڑا ایک ہمارے باڈا انہی پیش کی تھی کہ نیا سال ہے اس کی مبارکباد دے دی ہے ۔ چونکہ وزیر اعظم صاحب بیان موجود نہیں ہیں اور ان کی جو عدم دلچسپی ہے اس کو دیکھ کر میں یہ کہہ سکتا ہوں اور اپنے حلقہ کے لوگوں کو آف دی ہوڈس کے ذریعے انکو ایک شہر ضرور نظر کرنا چاہتا ہوں ۔

ابھی جنوری ہے ۔ نیا سال ہے
دسمبر میں پوچھیں گے کیا حال ہے

اب سمجھاتی : دسمبر 1991

شری محمد افضل عرف م - افضل :

جی - اب مندرجہ بالا تب تک وہ رہیں گے
بھی ۔

شری محمد افضل عرف م - افضل :
جو بھی سوئے پوچھ لیں گے انکا حال ۔ کل جب ہوڈس میں اس مسئلے پر بحث ہو رہی تھی ۔ اور ہمارے اب مندرجہ

میں ہے ۔ جی ۔ کہ ہر مورد صاحب
جل رہے تھے ۔ تو انہوں نے ایک بات
کہی تھی کہ اس ہوڈس میں کھڑے ہو کر
آپ کچھ بھی کہہ دیجئے لیکن جب آپ
عوام میں قابض گئے تو ہوں آپ کو کچھ
اور ہی دیکھنے کو ملے گا اور وہ لوگوں
کے جذبات کی آپ کو قدر کرنی پڑے گی
لیکن اس ہوڈس میں آئی تقریر پر
جو ری ایکشن تھا اور میں سمجھتا ہوں
کہ یہ ہوڈس صرف اس ہوڈس کو نہیں
پریمینٹ نہیں کرتا یہ ہوڈس اس
بوجے دلش کو رہیں بندھ کر رہا ہے ۔
آئی تقریر پر تمام پارٹیوں کی طرف سے
جو ری ایکشن آیا اس سے ہمیں یہ
اندازہ ہو گیا کہ اس دلش میں بھاری
فتنا مار لیں گے مدعو پیر اور میڈل سوا
لش پر ۔ اسکی سوچ پر بوجے دلش کا
ری ایکشن کیا ہو سکتا ہے ۔ وہ ری
ایکشن دیکھ کر مجھے جیسے آدمی کو جواب
دینا پڑی ہوگی اس سے آیت اب کہ لیکن
مسئلہ لوڈس کے انداز زیادہ مضبوط ہوا
ہے ۔ اور زیادہ بڑھا ہے ۔ میں سمجھتا
ہوں کہ جب تک یہ سوچ رہے گی کہ
زیادہ مایوس ہونے کی ضرورت نہیں
ہے ۔ میڈم ہمارے دوست جو اس
ہوڈس کے غیر میں اور ایک سیاسی
جماعت کے جن کا تعلق ہے ۔ ایک
بار میری ان سے گفتگو ہوئی ۔ اس
گفتگو میں انہوں نے فرمایا کہ مجھے یہ بات
کہنے میں کوئی شرم نہیں کہ میں اگر ایسی
ایسی کامیج ہوں انہوں نے فرمایا کہ میں
اسی ہوڈس میں اسے جذبے کی قدر کر

نکلتا ہوں۔ لیکن آج مجھے خیال آیا کہ کل
وہ بہت سی آئیٹ کر رہے تھے۔ وہ
میں نے کہا کہ میں بھی اپنا حسب و نسب
انٹو بتا دوں۔ میں اس کے دوس میں اعلان
کہ ناچتا ہوں کہ میں نہ مسلم ٹکیٹ کا
بچہ ہوں۔ نائیں جماعت اسلامی کا بچہ
ہوں۔ نہ میں جناح کا بچہ ہوں۔ نہ میں
کسی اور کا بچہ ہوں میں ہندوستان کا
بچہ ہوں اور ہندوستان کے بچہ کی حیثیت
سے آپ کے سامنے کچھ باتیں رکھنا چاہتا
ہوں۔ مہتمم۔ جو لیڈر سب سے اہم اس وقت
ملک میں تھے اس کی سیریس نہیں کا
اندازہ آپ تین چار باتوں سے لگا سکتے
ہیں۔ عملی طور پر ایک ٹرن سے چار
پانچ لوگوں کو گھسیٹ کر باہر نکال دیا اور
قتل کر دیا گیا۔ ان میں ایک بارہ سال
کا بچہ بھی تھا۔ جہانگیر لوری میں ایک گھر
کے ۱۱ افراد کو جس میں چار پانچ سال
کے بچے بھی شامل تھے زندہ جلا دیا گیا۔
خود گھر کے اندر ہماری حکومت کی کارٹری
ملا ظم فرمائیے۔ یہ واقعہ ہے۔ خورج
کے اندر بہت ساری دکانیں جلیں اور
بہت سارے لوگ مارے گئے۔ دکانیں
جو جلیں اسکے اندر یونیس منسٹر جو بھلے
سرمد حسین صاحب ہیں ان کی ۶ دکانیں
بھی بھجول دی گئیں۔ سارے اخباروں
میں جھپٹے۔ سرکار کہتی ہے خورج میں
۵ لوگ مرے۔ میں آپ کو بتاتا ہوں
صرف ایک گھر کے حافظ محمد صابر
صاحب کے خاندان ۱۵ افراد کو ایک

ایک ہی گھر میں قتل کیا گیا۔ ان کی مہتر
سال کی لڑھی ماں امید بیگم۔ چچا
محمد سلیمان۔ چچی مبین بیگم۔ ۱۶
سال کی بچی قمر جہاں۔ شاید ۱۵ سال۔
کلک ۱۵ سال رانی ۱۵ سال اور شرم کی
بات یہ ہے کہ ڈیڑھ سال کا بچہ ساجد
اسکو بھی قتل کر دیا گیا۔ مہتمم والی
اور جعفر آباد کے بیچ میں ایک ٹرن
سے سراج احمد نامی شخص کی فیملی
کو مارا گیا اور اس کے تین بچوں کو قتل
عمر ۱۵ سال۔ ۸ سال اور ۵ سال تھی
اسٹاکر ٹرن سے باہر بھجول دیا گیا۔
بھجولنے والے کون تھے۔ میں نے کفر
میں کیا ہے۔ میں نے اپنی آنکھوں سے
میں دیکھا ہے۔ قتل سارے اخباروں
میں لکھا ہے کہ بھجولنے والے کار سیک
تھے۔ یہ کار سیک وہ ہیں جو میرا
پر مشورتم رام کا مندر دوبارہ بنانے کا
دعوہ کرتے ہیں اور بھجول نو ٹرن سے
اسٹاکر بھجولتے ہیں۔ رام نے انہیں لٹی
یہ نہیں سٹھایا۔ عملی طور پر مہتمم
مجالس کے اندر ایک لکڑی کے ۲۷ سال کا
جوج سٹیل میں داخل ہونے کے باوجود
دوبار خود کشی کرنے کی کوشش کر چکا ہے
گندک اسٹیل کو سوئے ڈاکٹر اسکی آنکھیں
بھجول دی گئیں۔ اور اس کے ٹیسٹیکل کو کچل
دی گیا۔ یہ حالت ہے۔ اس کو دیکھ کر مجھ
فیض کا وہ شعر یاد آتا ہے۔
ہر ایک دار پر رکھتے جو سروں کے فراخ
جہاں ملک بھی یہ ظلم کی سیاہ رات تھی

وہ لوگ سب کی بات سہجی تھی۔
 مجھے لگتا ہے کہ پہلے وہ پیرس کا سفر
 تھا پھر شروع ہوا تھا (اور اب نیا سفر
 شروع ہو رہا ہے۔ وہ سو منا تھا ہے شروع
 ہوا تھا۔ حیرت کی بات ہے کہ کسی
 مہینہ مہینے اس پر ترجمہ نہیں فرمائی۔
 سابق وزیر اعظم ہزارہی ڈیلیٹائی نے
 ایک اخبار کو اسٹرویل دیتے ہوئے کہا
 مجھے نہیں لگا کہ میں نے اردو ہی کی کو
 رتھ یا تیرا نکالنے کی سو منا تھا شریف
 مندرستے طور کی حقیقت سے اجازت
 نہیں دی تھی۔ اسلئے یہ ترجمہ یا تیرا سو منا
 مندرستے باہر سے شروع ہوئی تھی میں
 نے یہ بھی لکھا تھا کہ سو منا تھا مندرستہ
 کوئی انجیل ڈائی اردو ہی صاف صاف لکھے
 میں پورے ڈالے۔ اس لئے کہ یہی
 الیسا لگتا تھا تو اس ترجمہ یا تیرا اور یہ بھی
 سسٹیمی حاصل ہو جائے گی۔ "یہ بھی
 اس بات ہے نوٹ کرنے کی۔ گویا اس
 ترجمہ یا تیرا کو سو منا تھا مندرستہ کا آئینہ دار
 حاصل نہیں تھا۔ انہوں نے یہ بھی لکھا کہ
 "سری سچھ میں میں آتا کہ یہ مسجد
 پوڑنے جا رہے ہیں۔ تمہارے بیاں تو
 سو منا تھا مندرستہ اعلیٰ میں آئے اندر
 ایک مسجد ہے اور وہیں وقف کی کچھ
 زمین بھی موجود ہے۔ وہاں وقف
 پر سوئی صاف آزاں دیتے ہیں۔
 ہم وقف پر گھنٹہ بجاتے ہیں۔ ہمارا
 کھی فیلڈا نہیں ہوا۔" شرم آئی جائیے
 ان لوگوں کو جو مندر مسجد کے نام پر
 اس ملک کے ایک اقلیت کو اڈیلیٹ
 کرنا جانتے ہیں۔ (مداخلت)۔

برڈم۔ یہ منادات کی صدی ہے۔ ہمارے
 معاشرے بزرگ لوگ جموں کے سہ ۷۷
 ڈیٹا ہے۔ میں خوش نصیب ہوں کہ میں
 نے ۷۷ میں دیکھا اور اس ملک کے
 پارٹیشن کا میں ذمہ دار نہیں ہوں۔ اسلئے
 اسکی کوئی سزا بھی نہ لگنے لگتی تیار نہیں
 ہوں۔ لوگ کہتے ہیں کہ اور ہمارے بزرگ
 کہتے ہیں کہ اس وقت ملک کی جو حالت
 ہے جس طرح سے لوگ شہر میں سفر
 کرنے سے ڈرتے لگے ہیں۔ جس طرح سے
 لوگ لمبوں کے اندر سفر کرنے سے ڈرتے
 لگے ہیں۔ اسکو دیکھ کر سہ ۷۷ اور ۱۸۸۷
 یاد آتا ہے۔ میڈم ۱۸۸۷ کے خون سے
 تو ہم نے آزادی کی پوری کہانی لکھی تھی
 اور ۱۹۷۷ میں جو خون بہا کر اس سے
 ہم نے اس ملک کا سید لڑائیں لکھا تھا
 اس میں ان دنوں کرنے والوں سے پوچھنا
 چاہتا ہوں کہ ۱۹۹۰ میں جو خون بہا
 رہا ہے اس سے آپ کون سی تاریخ لکھا
 جانتے ہیں۔ وہ آپ وہی جانتے ہیں جو ہم
 میں ہوا تھا۔ کیا آپ اس ملک کو ایک
 بار پھر بانٹنے کی سازش کر رہے ہیں
 کیا آپ اس ملک کی اقلیت کو اس
 بات کیلئے مجبور کر رہے ہیں کہ
 وہ بٹے بٹے تھو میں تیار ہوں گھری
 سو جائے۔ اور سر علقم کو بھاب اور
 کشید سارے لٹا جاتے ہیں۔

میڈم منادات کی شدت
 کون بدلا سکتی ہے۔ یہ آبد، ٹرا
 ہم سوال ہے۔ کیا بیاں آڈیو کیسے

نام نہانے کی ضرورت نہیں ہے۔ سارا ہاؤس میں پورا ملک اچھی طرح سے جانتا ہے۔

میدم۔ میں توجہ دلا رہا تھا کہ منادات میں اتنی شدت کیوں پیدا ہوئی۔ میڈم منادات پہلے بھی ہوتے تھے اور منادات آج بھی ہوتے ہیں۔ ہم لوگ اس کے عادی ہو چکے ہیں۔ لیکن جو شدت جو نفرت کا زہر اس بار پھلا ہے وہ اس کے پہلے بالیس بنالیس سال میں کبھی نہیں رہا۔ بی۔ اے۔ بی۔ کا سوال آیا تھا۔ کل مباحثہ صاحب نے کہا کہ ہم بی۔ اے۔ بی۔ کو فخر میں لہر رہے ہیں میں بی۔ بی۔ اے۔ بی۔ کی حمایت کرنے کے لیے جو تیار ہوں۔ لیکن بی۔ اے۔ بی۔ جو کچھ کر رہی ہے۔ بی۔ اے۔ بی۔ نے جو کچھ کیا ہے کیا اس کے بعد کوئی بھی انسان کوئی اکالاتی قوت بی۔ اے۔ بی۔ کے ان کاموں کی کفر سے متاثر و کالت کر سکتا ہے۔ لیکن میرے اس ہاؤس کے ایک شعور ممبر ہیں۔ یہ تو دیکھ کر کے باغ جنیم کے اندر ایک رپورٹ جمع ہے۔ آر۔ ایس۔ ایس۔ کو اتنا جعب ہے یہ اخبار اس نے لکھا ہے کہ راجیہ ممبر کے جناب بی۔ اے۔ بی۔ جن صاحب نے بی۔ اے۔ بی۔ کے ۲۷ کانڈروں کو ریسرڈ ٹیسٹ بھی ہیں اور انہی ایک ایل بھی ہے جس میں انہوں نے لکھا ہے کہ غالباً جیسوں ممالک دنیا کی ایک طرف کرنے کی ضرورت

ہیں ہے۔ یہ مسئلہ ہے اور اگر یہ غلط ہو تو آپ ضرور ڈنالی کیجئے گا۔ لیکن یہ آر۔ ایس۔ ایس۔ کے ایک اخبار میں جعبا ہے۔ میں بتانا چاہتا ہوں اس ہاؤس کو کہ.... (مداخلت) ڈاکٹر جنیند کمار جین: میرا نام نکیر بات کی جارہا ہے۔

ایب سہاجی: (انگلش)

ڈاکٹر جنیند کمار جین: (انگلش)

شری محمد افضل عرف م۔ افضل: پری بات میں لیجئے۔ اسمیں یہ کہا گیا ہے کہ افغانستان اور سری لنکا سے کچھ لوہٹ آکر ہندوستانی مسلمانوں کے گھر جعب گئے ہیں۔ اور منادات کرنا چاہتے ہیں.... "مداخلت"۔

ایب سہاجی: (انگلش)

ڈاکٹر جنیند کمار جین: (انگلش)

ڈاکٹر تساکر باندے: (ہندی)

شری محمد افضل عرف م۔ افضل: کمونڈ انہوں نے ڈنالی کر دیا ہے تو میں میں صاحب سے درخواست کروں گا کہ چونکہ یہ آر۔ ایس۔ ایس۔ کا اخبار ہے اخبار کے اندر جعبا ہے۔ اسڈر انڈیا ڈنائل اس اخبار کو بھیجا جائے گا۔

ایب سہاجی: (ہندی)

ڈاکٹر جنیند کمار جین: (ہندی)

شری ایس۔ ایس۔ ایلوالیم:

(ہندی)

ایب سہاجی: (ہندی)

شری محمد افضل عرف م۔ افضل: ملگم ارین شرم صاحب کی سند ہے۔ آؤرور "میں آئل رپورٹ جعب ہے۔

دلچسپ تو اس وقت ہندوستان میں ہے۔
اخبار بہت ساری خبریں دے رہا ہے۔
اگرٹرغصین تو دل ڈرتا ہے کہ آج بے
میں کوئی خبر بھی ہوگی۔ اس میں انہوں
نے آگہی کے آئینہ ایم۔ ایل۔ اے۔ کو
کوٹ کیا ہے جس میں انہوں نے کہلے
کہ "میں گاؤں گاؤں میں مسلمانوں
کو دکھاتا ہے۔"

خو لہجہ لگتے رہے ہیں وہ لہجے
کی ضرورت ہیں۔ آئیڈیالوجی
لہجہ ہے کہ "مسلمانوں کیلئے پاکستان
یا قبرستان"۔ پاکستان تو ہم جاتے
رہتے ہیں اور خاص طور پر جو
نئی چیزیں ہیں۔ اسکے بارے میں
آپ کو بتا دوں کہ ہم پاکستان
ماتے کے ذمہ دار ہیں اور نہ اسکی
سزا بھگتتے تھے کیا ہیں۔ ہم باہر
نے جو کچھ کیا تھا اس کے ذمہ دار ہیں
نہ اسکی سزا بھگتتے تھے کیا ہیں۔
ہم آزاد ہندوستان میں پیدا ہوئے
ہیں اور باہر کے قانون سے پاکسی اور
راجہ کے قانون سے گورن ہیں ہوتے
ہیں بلکہ اس ملک آزاد۔ سیکولر
ڈیموکریٹک آفس گورن ہوتے ہیں
وہ قانون جو کہ ہم کرنے کیلئے تیار
ہیں۔ میں اپنا لوٹنٹ آفٹ ووقو
رکھنا چاہتا ہوں کہ اس دلش کے
سلسلے جو لوگ ہندو فرقہ پرستی کو
عمالی دیتے ہیں اس کے ساتھ دینش کے
طور پر مسلم فرقہ پرستی کا بھی نام لیتے
ہیں۔ جب وہ مسجد کی بات کرتے ہیں
تو مذہب کی بات کرتے ہیں تو وہ مسلمان
کو بھی ایک طرح سے گاتی دیتے ہیں

کہ یہ مسجد کی بولڈیکس کر رہے ہیں یہ
سب فلفل کر رہے ہیں۔

میں آپ کو کہنا چاہتا ہوں کہ میں
ماہری آئینش کمیٹی کا مدنیہ ہوں۔
اور نہ اسکا مدنیہ بننا چاہتا ہوں۔
ایک آزاد ہندوستانی کی حیثیت سے
ایک فرانسٹ کی حیثیت سے ایک
ممبر آف پارلیمنٹ کی حیثیت سے اگر
سچائی اس میں ہے تو اسے سناؤ ہوں۔
مجھے آئینش کمیٹی میں جانے کی ضرورت
نہیں ہے۔ میں یہ کہتا ہوں کہ اس ملک
میں ہندو اور مسلمان بڑے اور چھوٹے
ممال کی طرح ہیں۔ حق پر اور جھوٹ
میں بھی ہوتا ہے پھر میں دیوار بھی کھینچ
جاتی ہے۔ ایک دیوار آپ کھینچ کر
لکھیں اس حق پرے کو پھر ہمارے ایک نئی
دیوار کھینچ کر لے کر کوشش مت
کریں۔ میں آپہا ہوں ہندوستان کا
کوئی مسلمان رام کے خلاف نہیں ہے۔
رام مذہب کے خلاف نہیں ہے۔ کیوں
ہیں یہ یہ بھی سن لیجئے۔ مذہب ہمارا
کیا کہتا ہے اس سلسلہ میں کسی بھی
مذہب کے پیروں کو کسی بھی مذہب
کی باغیخت شخصیت کو ٹراکنا اسلام
میں میرا میں بلکہ گناہ ہے اور یہ گناہ
میں نہیں نہیں کرتے۔ ہم ایم کی ایم ہیں
عدالت کے ہیں جس کی حکم کی کرتے ہیں۔
لکھن بوائے کمیٹی۔ میں یہ بھی کہتا ہوں
کہ ہمیں یہ پوچھنا کہ کوئی حق نہیں ہے کہ
رام پیدا ہوئے تھے یا رامین شیک
تھی یا نہیں تھی۔ یہ آپ کا بیلیف ہے
ہماری آئینش پر سب اختلاف ہیں۔ ہم
آپہا ہوں ہندوستان کی قدر کرتے ہیں ہم

آپ کے حلیف کی عزت کرتے ہیں۔
 ہم آپ کی آستھا کو سلام کرتے ہیں۔
 تمسکار کرتے ہیں۔ مگر جب آپ کی
 آستھا کسی کو شہری آستھا سے مل گئی
 گی تو اس ملک میں کوئی تو فیصلہ کر دے
 گا۔ کون ہے وہ فیصلہ کرنے والا۔
 مینر پر آپ بیٹھے ہیں بات کرتے ہیں
 تاریخ کو کار شیوہ اعلان کرتے ہیں
 اور جب بات چیت کا ماحول بننے
 لگتا ہے۔ تو تاریخ کو مل گئے ہیں
 کھلے کر دیتے ہیں اور اس کے بعد بنے
 بنائے ماحول کو تباہ اور برباد کر دیتے
 ہیں۔ یہ وہ ملیٹیٹ سیکشن ہے وشنو
 ہندو پر لشد کا جس نے اس ملک میں
 مشادرات شروع کر لئے۔ تاریخ
 سے تاکہ وشنو ہندو پر لشد اور باہری مسجد
 ایکشن کمیٹی کے درمیان گفتگو ہو رہی
 ہے وہ ناکام ہو جائے۔ اسکے بعد اسکے
 کاغذاتوں کا آدان پزدان ہوا۔ میں
 اور لچھ سن کہنا جانتا ہوں معزز ہوم
 منسٹر صاحب بیان کیے ہیں۔ یہ اس
 بات کے گواہ ہیں ان کی باتیں اس
 بات کی گواہ ہیں۔ اور ان کی باتیں اس
 بات کی گواہ ہیں یا نہ ہوں ان کا دل
 اس بات کی گواہی دے گا اور بتائے گا۔
 کہ کون جائز ہے اور کون ناجائز ہے۔
 ہم نے پورا کوآپریشن دیا ہی جنگ
 جب ہم سے اخبار والوں نے پوچھا کہ
 باہری مسجد ایکشن کمیٹی آپ نے کاذبات
 دئے ہیں اور اپنا بیعت میں
 کر دی ہے اور وشنو ہندو پر لشد والوں

نے اپنے کاغذات میں آپ کو گنا
 دیا ہے۔ تو ہم نے یہی جواب دیا کہ
 اس کا فیصلہ دس تاریخ کو کریں گے
 جب بات چیت کی مینر پر بیٹھے گئے۔
 لیکن یہ وشنو ہندو پر لشد دھڑے جس کے
 چیف منسٹر میں بھیرن سنگھ مشی دت
 صاحب۔ شہر پوار صاحب اور ملایم
 سنگھ یادو صاحب اور بیاں سردھو
 کانت سہائے صاحب ہوم منسٹر
 ہوئے ہیں جو چاروں حضرات آئیں پیر
 میں ان لوگوں نے بغیر لو جھے ان لوگوں
 کو بغیر کو بغیر نہیں لے گئے یہ
 اعلان کر دیا کہ ہم نے باہری مسجد کے
 کاغذات کو رجسٹر کر دیا ہے۔ وجہ
 وجہ یہ ہے کہ وہ تو سب لیگل کاغذات
 ہیں۔ مشور لکل کوئی پروف نہیں ہے
 میں آپ سے لوجھنا جانتا ہوں کہ ۱۸۸۵
 کے اندر اگر کسی گورنر نے کوئی دفعہ
 دیا ہے تو اس فیصلے پر عمل بھی ہوا
 ہے۔ تو کیا اسکی طرف لیگل حثیت
 ہے کیا اسکی کو مشور لکل امپورٹنس
 میں ہے۔ آپ فرماتے ہیں کہ اسکی
 کوئی مشور لکل امپورٹنس نہیں ہے۔
 جو کہتا ہے سوئیگی شاید وہی مشور لکل
 امپورٹنس ہوئی۔ یہ رویہ ہے وہ
 فریقین کا۔ میں اس سہرے کے صفحہ
 سوال کرنا چاہتا ہوں کہ آستھا کی ہم عزت
 کر سکتے ہیں لیکن ہم وہی سکتے ہیں
 عزت کر سکتے ہیں۔ وہی کا جو ماحول
 بنا رہا ہے کیا اس سے لڑا جا سکتا ہے

ایک لہاوت ہے اردو کے اندر۔ دہلی
میں بہت لوگ کہتے ہیں کہ - "ہمارا شیرو
وہیں اڑا - کھانے کو مانگے دہلی سڑا - یہ
وہی رویہ ہے کہ میں صاحب آپ کچھ
بھی کہتے رہے بات جیت کا نتیجہ کچھ
بھی نکلے ہم وہی بات کہیں گے جو پہلے
کہتے تھے۔ اور اس سے آپ ایچ ایچ پیچھے ہیں
ہیں گے۔ آپ ایک ایچ پیچھے نہیں ہیں
گئے ہیں اس سون میں آپ ہندوستانی
کی حیثیت سے ایک ہندوستانی مسلمان کی
حیثیت سے باہری کسی ملک میں رکھنا چاہتا
ہوں میں بچ لیتا ہوں میں مدھی آدمی
میں ہوں میں بالچوں وقت کی غازی بھی
نہیں پڑھتا۔ میں بہت گناہ گار ہوں۔ لیکن
میں فخر لیکن کی حیثیت سے آپ سے
لو جھنا چاہتا ہوں کہ اسلام میں اس
بات کی اعازت نہیں ہے کہ مسجد کو شاپا
جائے یا مسجد کو ٹوڑا جاسکے۔ یہ ہماری
آستھا ہے۔ آپ کی آستھا یہ ہے کہ رام
کا مندر وہیں بنے گا۔ جہاں گھر گھر ہے
اور گھر گھر کہاں ہے اس ممبر پر کے اچھ
جہاں حوزن کھڑے ہو کر خیمہ کا خطبہ دیتے
ہے اور غازی پڑھتے ہیں۔ کتنا زبردست
نکرا رہے ہیں آپ کی آستھا کی قدر کرتا
ہوں لیکن میں آپ سے لو جھنا چاہتا ہوں
کہ آپ کی آستھا امانت چار سال میں کیسے
حالت لے۔ ۱۹۴۹ میں جب مدد مسجد
کے اندر مورتیاں رکھی گئیں اسلی ایف۔
آئی۔ آر۔ درج ہے۔ اس کی طرف سے یو۔
ئی۔ گورنمنٹ نے بورا کیس لڑا ہے۔ اس
وقت آپ کی آستھا کہاں تھی ۱۹۷۷ میں
میں جب آپ جتا پارٹی میں شامل

ہوئے۔ یہ میں لی ہے۔ لی سے ٹرہ
ادب سے کہوں گا۔ اس سے آپ
نے رام جنم بھوئی کے مسئلہ کو کیوں نہیں
رکھا۔ یہ جیادو جنم لگا کر۔ رکھ یا ٹرا کر کے
اسی آستھا ثابت کرنا چاہتے ہیں۔ کی
اس ملک میں رہنے والے ہندو اس بات
سے کنوٹس ہو گئے کہ آپ کی آستھا صرف
چار سال میں جلی ہے۔ اس سے پہلے آپ
کی آستھا کہاں تھی۔ میں پوچھنا چاہتا ہوں
بڑے ادب سے سوال کرنا چاہتا ہوں۔
بڑا اچھا سمجھ کر آپ سے بات کرنا چاہتا
ہوں۔ دیکھئے آپ جن قسم کا ماحول سیرا
کر رہے ہیں۔ آپ کہتے ہیں کہ اعلیٰ تھوڑے
ساتھ ایمپرنٹ ہو رہے ہیں۔ مجھے شرم آتی
ہے یہ بات کہتے ہوئے کہ ہم ۵۰ سالوں
سے رو رہے ہیں کہ منسلکات میں ہمارا خون
ہماری جاننا دیں ہماری اعلیٰ لٹ عالی
ہے۔ ہم جلد سے میں ہندوستانی کی
پر لیں اس بات کی گواہی ہے۔ میں مبارک
بلو دیتا ہوں نیشنل پر لیں کر۔ جس نے
شریک امانداری کے ساتھ ان ۵۰ سالوں
میں اس ملک کی عسقیوں کو لکھ کر حوام
کے سامنے رکھا اور آج بھی رکھ رہی ہے۔
ہمارا پرینٹنگ لو کر یوں ہیں ۱۵ اور
۲۰ منیجمنٹ سے ڈیڑھ منیجمنٹ رہ گیا ہے۔
کیس ایک منیجمنٹ ہے۔ کیس زیر و ہے۔
آپ کہتے ہیں کہ دھرم کی بات نہ کر لیجئے
میں آپ سے پوچھتا ہوں کہ لی۔ اے۔
سی۔ کے اندر آپ نے کتنے مسلمانوں
کو رکھا۔ کتنے مسلمانوں کو آپ نے
پولیس کے اندر رکھا۔ کتنے مسلمانوں
کو آپ نے فوج میں رکھا۔ ذرا

تھا جسے سیشنل سٹیٹریٹ ریکارڈنگ اٹھانے کے لیے اس محفل پر پارلیمنٹ میں کابینہ کے ساتھ لکھنے اور بتانے کے لیے اس کو آپ نے رکھا ہے۔

ہم کو معاشی طور پر مسائل کا کر کے تباہ کیا جا رہا ہے۔ سرکاری طور پر انڈیا میں بچے ہوئے لوگ ہم سے آگے رہتے ہیں۔ ہمارے سرکاری ریکارڈنگ کم ہے اور الکاحل ہے کہ مسئلوں کے ساتھ امپیرمنٹ کیا جا رہا ہے۔ بھائی گس امپیرمنٹ کی بات کر رہے ہیں آپ۔ لہذا آپ اس امپیرمنٹ کی بات کر رہے ہیں کہ ہر الیکشن میں سے پہلے اردو کا اندر لگا دیا جائے۔ ہر الیکشن سے پہلے یہ کہہ دیا کہ سب مسلمانوں کو ہم برابر سے ریزنٹیشن دیں گے۔ مجھے شکایت ساری باتوں کے ہے معاف سمجھو گا۔ اپنی بات سے بھی ہے اور اس باتوں کے اندر کھڑے ہو کر میں نے یہ کہا ہے کہ اور جب تک زبان سے کہتا ہوں گا۔

میں آپ سے ایک بات کہنا چاہتا ہوں کہ امپیرمنٹ کا تو آکر کر لے کر عام آدمی اس دلیش کے ۷۰ فیصدی ہندو اور مسلمان بڑھے کتبے میں ہیں بہت جگہ سے ان کے دل میں نفرت پیدا کی جا رہی ہے لیکن اس نفرت کا نتیجہ کیا نکالے گا۔ میں صرف آپ سے یہ پوچھنا چاہتا ہوں۔ میرا خیال یہ ہے کہ اس نتیجہ آہستہ آہستہ ظاہر ہونے لگا ہے

مجھے افسوس ہے کہ کہیں کسی ایک مساد میں کچھ مسلمان لڑنے لگے تو ان کے لوگوں پر حملہ کر دیا۔ مجھے نہیں معلوم کہ یہ ٹھیک ہے یا غلط ہے۔ گروہ فٹری جی یہاں بیٹھے ہیں ان کو یہ ہوگا۔ میں آپ سے یہ کہنا چاہتا ہوں کہ ایسا کیوں ہوا۔ میں اس حملہ کی کسی بھی حالت میں بھی میں نہ بھی جاؤں گائب بھی۔ حمایت جن کرو لگا لیکن یہ ضرور پوچھنا چاہیے کہ آپ کسی کو مارتے رہیں گے تو کتے تک وہ برداشت کر لے گا۔ کتے تک وہ سنا رہے ہیں۔

مہاش صاحب پیسہ کا حساب رکھتے ہیں۔ وہ بتا رہے ہیں کہ ہم تو سود کا حساب رکھتے ہیں۔ مہاش صاحب اہل میاں لڑتے ہیں رکھتے ہیں میں ان سے پوچھنا چاہتا ہوں کہ وہ لاشوں کا حساب کیوں نہیں رکھتے ہمارے بے۔ کے۔ میں صاحب اس

بائیس کے معزز مجھ میں نہیں شروع میں اہل ماتوں سے ٹرامنا ٹر ہوا اور مجھ لگا کہ ان کے اندر جد ہے مرد و مسلمان الٹنا کو ٹر جانے کا لیکن یہ غلطی سے آر۔ ایس۔ ایس کے آر می ہیں یہ ... (مداخلت) ...

ڈاکٹر نے۔ کے۔ جس: (الکشن) مہاش صاحب افضل عرف م۔ افضل: مسٹر جس۔ آئی وائٹ پور ہیلپ۔ آئی ریل وائٹ پور ہیلپ۔ میں آپ سے پوچھتا ہوں کہ آپ نے ایک کسٹ بنایا ہے۔ وہ کسٹ میں یہ بھی دکھاتا ہے آپ لیکن عیسائی جب میرے آس میں دو بھائیوں کی لاشیں رکھیں تو میرا خون کھول دیتا۔ اور میرے سگنے اس

ملک میں ۱۹۷۷ء کے بعد کی سٹیڈوں -
 نزاروں لاشیں گھوم گئیں جن کا پی۔ای
 سی۔ نے یہ قسٹر کیا ہے۔ لیکن میں پوچھنا
 چاہتا ہوں کہ آپ نے الودھیا کی لاشوں
 کے کسٹ بنائے اور انکو کرسی میں
 کنورٹ کر دیا۔ اگر آپ اس سٹیڈ کے
 لئے واقعی وفادار ہیں تو آپ علیحدہ
 کی لاشوں کے کسٹ بنائیے آپ خود
 کی لاشوں کے کسٹ بنائیے آپ ملیانہ
 کی کسٹ بنائیے۔۔۔۔۔ (مداخلت)
 ڈاکٹر جنید راجین: (الگوش)
 دی ڈیٹی جیرمین: (الگوش)
 ڈاکٹر جنید راجین: (الگوش)
 اب سمجھتی: (ہندی)
 ڈاکٹر منا کر بانڈے: (ہندی)
 دی ڈیٹی جیرمین: (الگوش)
 ڈاکٹر جنید راجین: (الگوش)
 دی ڈیٹی جیرمین: (الگوش)
 ڈاکٹر جنید راجین: (الگوش)
 دی ڈیٹی جیرمین: (الگوش)
 شری محمد افضل عرف م۔ افضل:
 مہودیم میں الکا سٹڈ گزار ہوں۔ ملیانہ
 کا کسٹ انہوں نے اسٹڈ بنا یا تھا کہ وہ
 اسوقت کانگریس کی سرکار تھی اور
 الودھیا کا کسٹ انہوں نے اسٹڈ بنا یا
 کہ ان کی وی۔ پی۔ سنگھ کے ساتھ محسن گئی
 (مداخلت)
 دی ڈیٹی جیرمین: (الگوش)
 شری محمد افضل عرف م۔ افضل:
 میں کنفلڈ کر رہی ہوں۔ مہودیم۔ جہاں
 میں ایک طرف منسا دانت سٹڈ و مہودیم
 پرنسپل کی اور اشارہ کر رہی ہوں وہیں

اس کے لئے حکومت کو بھی برابر کا دم
 دار ماننا ہوں۔ میں آپ سے ایک
 بات عرض کرنا چاہتا ہوں کہ حکومت کا
 کام لوگوں کو سیکورٹی دینا ہے کسی نے کل
 مذاق میں کہا کہ مہودھ کانت ہی بیلے ہی
 تھے اور آج بھی ہیں میں یہ بات سمجھ سکتا
 ہوں اور مجھے پورا یقین ہے کہ اگر مہودھ
 کانت ہی جیسے منسٹر دم داری سے کام
 کریں تو شاید کچھ مسائل حل ہو سکتے ہیں
 نے انہوں اس بات کیلئے کوشش کرتے ہوئے
 دکھائیے حالانکہ یہ الگ بات ہے کہ یہ
 ان کوششوں میں ناکام ہوئے ہیں۔ جب
 علیحدہ میں دلگاہوا تو میں ان کے کھڑ گیا
 اور میں نے ان کے گھر پر ہی دھڑا دیا یہ
 مجھے عجیب سے اچھا لگے گئے۔ میرے
 سامنے انہوں نے جو کچھ بھی لو۔ پی۔ سرکار
 کو کہہ سکتے تھے کہا اور جو کچھ انتظام
 فور میں سمجھنے کے لئے کر سکتے تھے
 انہوں نے کتاب میں الکا سٹڈ گزار ہوں۔
 لیکن میں اس بات کا گواہ ہوں میں نے
 انکی بے بسی اپنی آنکھوں سے دیکھی ہے۔
 جب اس ملک کا وزیر اعظم اور وزیر خلیفہ
 بھی فرہارانہ وارداتیں سمجھنے والوں
 کے آگے بے بسی محسوس کرنے لگیں تو
 ذرا مجھے تامل ہے کہ وہ لوگ من کے ساتھ
 ظلم ہو رہے ہیں وہ کیا کریں گے۔ وہ
 لوگ پہلے مائوس ہوئے تھے پھر
 ان کے اندر بے ڈاری بڑھی۔ میں آپ
 سے نوید کرنا چاہتا ہوں اس بات کو
 وزیر داخلہ خاص طور سے نوٹ کریں۔
 کہ اب ان کے اندر لغات کا خیمہ بڑا
 ہو۔ مح۔ وزیر اعظم صاحب خوشنما

موجود ہیں ہیں جنہیں دلچسپی نہیں ہے
 شاید اس مسئلہ پر انکی بین دن سے
 بیانات کی جھڑکی ہوئی ہے۔ ایسا
 ملک رہا ہے جسے پنجاب کا مسئلہ حل
 کر لیا گیا ہے۔ چراغ تلے اندھیرے والی
 بات ہے۔ پنجاب کا مسئلہ حل کرنے
 کیلئے بیانات دے رہے ہیں۔ چراغ
 کے تلے نہ جانے کتنے کتنے۔ نہ جانے کتنے
 پنجاب بدل رہے ہیں۔ ابھی اس بات
 کا پتہ نہیں ہے۔ کہ جب یہ محفل پھیل کر
 کھڑے ہو جائیں گے تب وصیاید اس
 طرف بھاگے گئیں۔ وزیر داخلہ صاحب
 بیان موجود ہیں میں سمجھتا ہوں کہ اس
 معزز ملک دس کے اندر وہ بیان دیں
 کیونکہ مسئلہ بہت بڑا ہے۔ باہری تہیہ
 اور رام جیجی سمجھنے کے مسئلے سے میں
 کسی کی آسقا کے خلاف نہیں ہوں لیکن
 وزیر داخلہ کو یہ بات بتانی ہوگی کہ
 اس ملک میں غنڈہ چلے گی یا آسقا چلے
 گی غنڈہ چلے گی یا قانون چلے گا۔ غنڈہ چلے
 گی یا انصاف چلے گا۔ وہ مجھے
 بتائیں کہ باہری سمجھ توڑ کر مندر بنانے
 کی اجازت دی جائے یا نہیں۔ وہ اس
 مڈ میں میں بیان دیں اسلئے کہ جب
 اس ملک کا وزیر اعظم شوق لینے کے
 دو سو سے دن ایک فرقہ پرست پارٹی
 کے صدر کے دفتر ملنے کیلئے جاتا ہے
 سلام کرنے کیلئے جاتا ہے تو مجھے اس
 وزیر اعظم کی سوشلسٹ حقوی معاف
 وادی حقوی فیم ہوئی نظر آتی ہے۔
 لوگوں کا کانفیڈنس اس میں قائم ہو

جاتا ہے۔ میں آپ سے کہنا چاہتا ہوں
 اگر ووٹ کی سیاست میں ۸۸ سٹیٹ
 کے دم پر میاں پر کوئی شخص لینے آئے
 کسی کو جھٹکا سکتا ہے تو آپ سمجھ لیں
 اس ملک میں جاہل لوگوں کی پارلیمنٹ کے
 اندر کمی ہو گئی ہے کوئی کمی نہیں ہے۔ اگر
 جھٹکا کے بارے میں شروع ہو گیا تو اس ملک
 کیلئے ایک نقصان دہ ہوگا۔

میں آخر میں کہنا چاہتا ہوں خاص طور
 پر ان عقائد سے جو ہندوستان کے
 مسلمانوں کو بھرتیگا۔ پاکستان اور قبرستان
 دکھانا چاہتے ہیں میں انکو کہنا چاہتا ہوں
 کہ ہم نہ پاکستان جائیں گے نہ قبرستان جائیں
 گے اگر آپ نے ہمیں کروڑ مسلمانوں کو
 قبرستان بھیجے گی کوشش کی تو دو دو گنہ
 سن جائے اور اس کے لئے ایک نیا پل
 بنایا گیا آئے قبرستان کیلئے۔ اس بات
 کو آپ سمجھ لیں۔ اسلئے بہتر یہ ہے کہ
 محال چارہ بے کا ماحول پیدا کرنے کیلئے میں
 آپ سے درخواست کرتا ہوں۔ مجھ کو جو کر
 دیں کہ تمہارے اس کو ڈرمت سمجھ
 میں اس ملک کی کھلنے کیلئے کہہ رہا ہوں
 لغت کا ماحول فیم کیلئے۔ دوستی میں جو
 فائدہ ہے وہ دشمنی میں نہیں ہے۔ اس
 سے ملک کا نقصان ہوگا۔ اس ملک
 کے اندر مل کا یا مسلمانوں کا نقصان نہیں
 ہوگا۔ اگر اس ملک میں ہندو برے گناہ
 یا اس ملک میں مسلمان برے گناہ تو اس ملک
 کا نقصان ہوگا اور اتنا بھانپ لیتا ہے
 ہوگا کہ جو نہ آپ سے اٹھایا جائے گا اور نہ
 کسی اور سے (مداخلت)

شری گلبدیش نارائن سارنگ: آپ
دھمکتی مت دیجئے۔ (مداخلت)
شری محمد افضل عرف م۔ افضل:
میں دھمکتی نہیں دے رہا ہوں۔ میں خاص
طوری سے نئی جبرائیل کی طرف دھیان دلانا
"مداخلت" میرا دھمکتی دینے کا اشارہ
کبھی نہیں رہا ہے۔ آپ اٹھا کر دیکھ لیجئے
چار سال کی تاریخ کا ریکارڈ ہماری کمیونٹی
میں سے کس نے بھی دھمکتی دی اس کا کیا
حشر ہوا آپ دیکھ لیجئے۔ آج اسکو عوام
نہیں پوچھتا۔

پروفیسر سوریہ زید رہنما جابر: (الگوش)
شری محمد افضل عرف م۔ افضل:
جس شخص نے دھمکتی دی اسکا حشر
آپ کے سامنے ہے۔

ہم دھمکتی دینے والے لوگ نہیں ہیں۔
لیکن آپ یہ نہ سمجھئے کہ ہم بے قدر و قیمت
لوگ ہیں۔

شری گلبدیش پیرساد ماسٹر: (ہندی)
اب سمجھاتی: (ہندی)
شری گلبدیش پیرساد ماسٹر: (ہندی)
شری محمد افضل عرف م۔ افضل:
میں قبرستان کیلئے کہہ رہا ہوں.....
(مداخلت).....

شری گلبدیش پیرساد ماسٹر: (ہندی)
شری محمد افضل عرف م۔ افضل:
آپ اتنے خوف زدہ کیوں ہو۔ میری
سمجھ میں نہیں آتا کہ اس ملک کے اندر
لاشوں کے ڈھیر بننے ہوئے آپ خوف
زدہ ہیں ہوتے ہیں میرے بولنے سے
آپ خوف زدہ ہو گئے... (مداخلت).....
شری گلبدیش پیرساد ماسٹر: (ہندی)

شری محمد افضل عرف م۔ افضل: میں
اس پاکستان کو بھی غلط سمجھتا ہوں
اور اس پاکستان کو بھی غلط سمجھ رہا ہوں
یہ بات میں آپ سے کہہ رہا ہوں۔ لیکن
آپ لوگوں کو مجبور مت کر بیٹھے۔

شری گلبدیش پیرساد ماسٹر: (ہندی)
شری جنید کمار جین: (ہندی)
شری محمد افضل عرف م۔ افضل:
ہماری کوئی مجبوری نہیں ہے مجبوری آپ
کی ہے۔ سیاسی مجبوری ہے۔ ووٹ کی
مجبوری ہے۔.....

ڈی ڈی جی جین: (الگوش)
شری گلبدیش پیرساد ماسٹر: (ہندی)
شری محمد افضل عرف م۔ افضل:
میں چھپا ہوا ہے۔

شری گلبدیش پیرساد ماسٹر: (ہندی)
شری محمد افضل عرف م۔ افضل:
نے کہہ دیا ہے۔

اب سمجھاتی: (ہندی)
شری محمد افضل عرف م۔ افضل:
اگر اس ملک کے مسلمان کو کوئی شخص
تیرستان بھیجا جاتا ہے تو ہماری آئین
سورگما۔ اسکو سمجھ لیجئے۔ آپ سندن
کے اھو و سبت اچھی تقریریں کرتے ہیں۔
ابرار صاحب نے بھی کہا کہ آپ لوگ
سندن میں بہت اچھی تقریریں کرتے ہیں
نہیں کیا سندن میں وہی تقریریں کرتے ہیں
ہو رہے کہ سندن میں رہے۔

ڈاکٹر جنید کمار جین: (ہندی)
شری محمد افضل عرف م۔ افضل:
بالکل نہیں کر رہے تھے۔ جب آپ تقریر
کرتے تھے تو میں اس کو خوف کا اور نوک

نکر دلوں... (مداخلت)
 دی ٹی بی جیبر میں (العلی)
 شری احمد افضل عرف م۔ امصل
 میں حکومت سے اس بات کا مطالبہ کرتا
 ہوں کہ نا چاہتا ہوں کہ اس ملک کے عوام کو
 مذہب کو مسلماً قرار دے۔ وہ پورا پورا مسلمانی
 دے اور بات چیت کو آگے بڑھانے کی
 کوشش کرے اور اگر بات چیت آگے
 نہیں بڑھتی ہے تو حکومت کو سمجھ لینا چاہیے
 کہ توں کوٹک وزیر میں اور توں واقعی نہ
 ماننا چاہیے ہے۔ آپ اس کے مطابق
 قانون کو تسلیم کریں میں مسلسل منتظر
 ہوں۔ اگر ذاتی صاف صاف نے ایک بیان دیا
 اور وہ اخباروں میں بھی چھپا کہ اس ملک
 کے مسلموں کو پولیس میں بجا سکتی ہے
 اسٹیشن میں بجا سکتی ہے اور اگر بجا سکتے
 ہیں تو ہم مذہب بجا سکتے ہیں کیا مطلب
 ہے اس بات کا۔ کیا آپ تہذیبی ٹویشن
 کے خلاف بات نہیں کر رہے ہیں...
 (مداخلت)....

THE DEPUTY CHAIRMAN: Now it is over. The House is going to be adjourned.

میر محمد افضل عرف م۔ امصل
 کیا تو نے اس ملک میں اس بات کا توں
 لینے والا ہے۔ کسی نے کیا آگے اور بغاوت
 کا مقدمہ دائر کیا۔ کیا ہم سنہری نے
 کوئی انگلیشن دیا میں اگر کہوں کہ جے سے۔
 جس صاحب آپ کے ساتھ جو مذہب و گوم
 رائج ہے۔ وہ آپ کو سنیں بجا سکتا۔ اس
 میں اتنی طاقت نہیں ہے۔ اس ملک
 کی حکومت آپ کو نہیں بجا سکتی۔ بجا سکتے
 ہیں تو ہم بجا سکتے ہیں تو میں دیا جرم کر رہا
 ہوں۔ لیکن اگر کسی پارٹی کا لہجہ کر رہی
 جرم کر رہے تو نہ تو ہم سنہری سنہری ہیں۔

THE DEPUTY CHAIRMAN: The House is adjourned and we will meet again at 2. 30 P. M.

The House then adjourned for lunch at thirty-three minutes past one of the clock.

The House reassembled after lunch at thirty-three minutes past two of the clock; [The Vice-Chairman (Shri M. A. Baby in the Chair.)

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI M. A. BABY): Before we resume the discussion I would like to make an announcement that at quarter to three the Minister of External Affairs would make a statement on the issue raised earlier in this House regarding the visit of the—" Foreign Minister of Iraq to India. Yes, Shrimati Remuka Chowdhury to resume discussion.

SHRI JAGESH DESAI (Maharashtra): I must compliment the Minister. He is very prompt.

CALLING ATTENTION TO A MATTER OF URGENT PUBLIC IMPORTANCE—COMMUNAL SITUATION IN THE COUNTRY—(Contd.)

SHRIMATI RENUKA CHOWDHURY (Andhra Pradesh): This debate is going on in the Parliament since yesterday and we are witnessing yet another reduction of reality into statistics. The matter that this country has been seized with is a failure of nation-building. Why is it

that time and again we come back to Parliament to discuss the merits of secularism? Secularism is not a god which we are to deify or worship. Secularism is a way of life, it is the spirit in which we all live together collectively and singly in this social fabric, and I feel, it is really pretentious that we sit here today and start speaking on an ode to secularism. The absolute failure that the nation is seized with is nation-building. Why is it that after 47 years of independence we are standing up and talking on a subject like this? This is something